Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

शास्त्रों में वर्णित चर्म वाद्यों के पटाक्षरों का विश्लेषण

Jaydeep Lakum[1], Prof. Gaurang Bhavsar[2]

1 Research Scholar, Department of Tabla, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
2 Research Guide, Department of Tabla, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara

शोध सार

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा शास्त्रों में वर्णित चर्म वाद्यों के पटाक्षरों का विश्लेषण किया है। प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक विभिन्न संगीत ग्रंथो का निर्माण हुआ है। इस शोधपत्र के माध्यम से शोधार्थी संगीत के विभिन्न शास्त्रों में वर्णित चर्म वाद्यों के पटाक्षरों को एकत्र करने का प्रयास किया है। इस विश्लेषण में पटाक्षर का निर्माण, संबंधित ग्रंथ में किए गए उल्लेख, संबंधित चर्म वाद्य पर वादन, स्वर ध्वनियों के साथ के संयोजन एवं वर्तमान समय में यदि उपयोग किया जाता है, इस विषय प्रस्तुत किया है।

बीज शब्दः संगीत ग्रंथ, चर्म वाद्य, पटाक्षर, तबला।

भूमिका

प्राचीन काल से भारतवर्ष में वेद, पुराण व उपनिषदों को विभिन्न भारतीय विद्याशाखाओं में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं परंपराओं का आदर्श मानते हुए, ज्ञान व शिक्षा के पथ पर चलने का विनम्र प्रयास भारतीय सभ्य समाज की विचारधारा रही है। संगीत का उद्‌भव अति–प्राचीन काल से हुआ। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद में संगीत का विवरण प्राप्त होता है, किंतु वेदों में किए गए क्लिष्ट वर्णन को संक्षिप्त में कहने के लिए उपवेदों का प्रादुर्भाव हुआ। सामवेद के उपवेद गांधर्ववेद में संगीत का सरल भाषा में वर्णन किया गया है। संगीत की विधाएँ गायन, वादन, नृत्य तथा नाटक का वर्णन भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र संगीत के गौरवान्वित एवं मान्यता प्राप्त ग्रंथ में प्राप्त होता है। भरतमुनि के परवर्ती ग्रंथों में दत्तिलकृत 'दत्तिलम्', कोहलकृत 'संगीत मेरु', मतंगमुनिकृत 'बृहदेशी', नंदीकेश्वरकृत 'भरतार्णव', नान्यदेवकृत 'भरतभाष्य', शारंगदेवकृत 'संगीत रत्नाकर', सुधाकलशकृत 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार', पार्श्वदेवकृत 'संगीत समयसार', अहोबलकृत 'संगीत पारिजात' आदि ग्रंथों का वर्णन प्राप्त होता है। संगीत के बहुमूल्य ग्रंथों में उत्तम पाठ्य सामग्री प्राप्त होती है। उपरोक्त ग्रंथों में संगीत की मुख्य तीन विधाएँ गायन, वादन एवं नृत्य से संबंधित समस्त तथ्यों का विवरण प्राप्य है। इस विवरण में राग, प्रबंध, ग्राम, मुर्च्छना, जाति, वाद्य, ताल, ताल के प्राण, ताल का स्वरूप, ताल के लक्षण, ताल के वर्ण, नृत्य, नृत्य के लक्षण, नृत्य के प्रकार, गायक, वादक तथा नर्तक के गुण–दोष आदि विदित होते हैं। नाट्य संबंधित विस्तृत वर्णन में नायक–नायिका के भेद, रंगमंच की बनावट आदि का वर्णन किया गया है। शोधार्थी ने इस शोधपत्र के विषय से संबंधित उपरोक्त संगीत ग्रंथों में से नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर, संगीतोपनिषत्सारोद्धार, संगीत पारिजात में वर्णित चर्म वाद्यों के पटाक्षरों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

संगीत के महत्त्म ग्रंथों में वाद्यों के चार प्रकारों का वर्णन प्राप्त होता है जो 'तत, सुषिर, अवनद्ध एवं घन' है। इन वाद्यों के विस्तृत विवरण से वाद्य के सामान्य लक्षण, वाद्य के प्रकार, वाद्य की जाति, वाद्य की बनावट, वाद्य के गुण–दोष आदि प्राप्त होते हैं। तंत्री वाद्यों को तत, भीतर से खोखली नली में वायु का प्रसरण करने से स्वर का

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

उत्पादन करने वाले वाद्यों को सुषिर एवं घन जैसी ठोस वस्तु अथवा पदार्थों को आपस में टकराकर ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्यों को घन वाद्यों की श्रेणी में रखा है। अवनद्ध वाद्यों को शास्त्र में कुछ इस प्रकार व्याख्यायित किया है, ''जिन वाद्यों का मुख चर्म से मढ़ा हुआ होता है एवं जो वाद्य अंदर से अंतरयुक्त (खोखले) होते हैं वह वाद्य अवनद्ध वाद्य कहलाते है।'' अवनद्य वाद्यों को चर्म वाद्य से भी संबोधित किया गया है। अवनद्य वाद्यों पर हाथ, डंडीओ जैसी वस्तु से प्रहार कर ध्वनि या शब्द (वर्ण) उत्पन्न किए जाते हैं। अवनद्ध शब्द के अतिरिक्त इन वाद्यों को ''आनद्ध'' एवं ''वितत'' भी कहा है एवं नाट्यशास्त्र ग्रंथ में भरतमुनि ने इन चर्म वाद्यों को 'आनद्ध' से संबोधित किया है।[1]

पंड़ित शारंगदेव द्वारा संगीत रत्नाकर में 'अवनद्ध'[2] एवं वाचनाचार्य सुधाकलश द्वारा संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रंथ के चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत चर्म वाद्यों को 'अवनद्ध'[3] एवं 'आनद्ध'[4] दोनों शब्दों से संबोधित किया है। संगीत पारिजात के रचयिता पंडित अहोबल ने भी ग्रंथ के द्वितीय कांड के वाद्याध्याय में चर्म वाद्यों को 'आनद्ध'[5] शब्द से संबोधित किया है। इन वाद्यों में एक मुखी अर्थात् वाद्यों का एक मुख चर्म से आच्छादित एवं द्विमुखी वाद्य अर्थात् वाद्यों के दोनों मुख को चर्म से आच्छादित किया गया हो, उन मुख या मुखों पर जब हाथ या कोई ठोस वस्तु से आघात किया जाता है तब निष्कासित ध्वनि को शास्त्रों में पाट कहा गया है। पाट का अर्थ है पटाक्षर या वर्ण। पटाक्षर में पट का अर्थ है तोड़ना या ऊपर से आघात करना। जब चर्म वाद्य पर आघात करने से जो अव्यक्त ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं तत्पश्चात् उन ध्वनियों के अक्षर को पटाक्षर (वर्ण) कहते है। वर्तमान समय में चर्म वाद्यों के वादन से निकलती ध्वनि को बोल भी कहा जाता है।

नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने तेंतीसवें अध्याय 'अवनद्धातोद्यविधान' में पुष्कर वाद्यों की वादन विधि के समय प्रयुक्त होने वाली सोलह ध्वनियाँ बताई है। यह ध्वनियाँ पटाक्षर के रूप में वर्णित है जिन्हें मुनि ने व्यंजन ध्वनियाँ कहा है। यह व्यंजन ध्वनियाँ 'क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ण, त, थ, द, ध, म, र, ल, और ह'[6] प्रकार की है। इन अभ्यस्त ध्वनियों को उन्हीं के द्वारा वर्णित स्वर ध्वनियाँ 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः'[7] के साथ मिलाया गया है। कुछ व्यंजन ध्वनियों को आपस में मिलाकर संयुक्त ध्वनियों का भी निर्माण किया है, जैसे क, घ, त, ध, और द में र को संयुक्त कर– 'घ्रुं, ध्रं, त्रे, त्रं, ध्र, (द्रं) ध्रं'[8] किया जाता है। इन वर्णित ध्वनियों का चर्म वाद्यों के वादन समय निकास होता था। पणव और दर्दर वाद्यों के वादन करते समय क्रमशः 'किरि, घिण्टा, यो, थो, धोत्र, हुलां, णो'[9] और 'रेक्लति, त्रिकल, क्लेचेन्द्रों, गोणों'[10] आदि बोल प्रयुक्त होते थे। संगीत रत्नाकर में पंडित शारंगदेव ने वाद्याध्याय में चर्म वाद्य, उसकी वादनविधी, लक्षण एवं उसके पटाक्षर (वर्ण) और हस्तपाट का चित्रण किया है। शारंगदेव ने पटह के पाट (पटाक्षर) का विवरण करते कहा है की 'ङ को छोड़कर क वर्ग (क, ख, ग, घ), ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण), त वर्ग (त, थ, द, ध, न), र और ह' मार्ग और देशी दोनों तरह के पटह से उत्पन्न होते हैं।[11] संगीत रत्नाकर में वाद्यों के जो पाट का वर्णन है उनके संयोग से एवं हाथों (के आघात) से उत्पन्न होने वाले पाटों के भेद को हस्तपाट कहा है।[12] यहां पाट का संबंध प्रत्यक्ष रूप से पटाक्षर (वर्ण) से है। इन हस्तपाटों में चर्म वाद्यों के भिन्न भिन्न प्रकार के पाटों (बोलों) का वर्णन ग्रंथकार ने किया है। इस हस्तपाट के पटाक्षर उस वाद्य के मुख्य वर्ण के संयोग से बने हुए है।

संगीत रत्नाकर में चर्म वाद्य के इक्कीस हस्तपाटों का उल्लेख प्राप्त होता है एवं पटह और हुडुक्का के सोलह हस्तपाटों का विस्तृत विवरण दिया है, उपलब्ध हस्तपाटों में प्रयुक्त पटाक्षर 'क, ख, ग, झ, ट, ड, ण, त, थ, ध,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

न, म और र' है।[13] इन पटाक्षरों को स्वर के साथ मिलाकर ग्रंथकार ने वाद्यों के हस्तपाट बनाए हैं। वाचनाचार्य सुधाकलश द्वारा चौदहवीं शताब्दी में निर्मित संगीतपनिषत्सारोद्धार ग्रंथ में ताल का स्वरूप एवं वाद्यों का वर्णन उत्तम तरीके से किया है। ग्रंथ के चतुर्थ अध्याय में मुख्य चर्म वाद्यों का एवं वाद्यों के हस्तपाटों का वर्णन विस्तारशः किया है। इस वर्णन में ग्रंथकार द्वारा 'त, क, ड, द, र, ग, ध, ढ, थ'[14] आदि पटाक्षरों की प्राप्ति होती है। यह पाटों के साथ स्वर एवं अन्य व्यंजनों को मिलाकर 'तक्कड़, दरगड़, धिद्धिकड़, दाधिक्कड़, ताधिथ (त्थ) उ'[15] जैसे संयुक्त बोलों का स्पष्टीकरण देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त 'न, ख, च, ट, ण, ह, झ'[16] को भी अन्य स्वर एवं पारस्परिक संयुक्त कर हस्तपाटों का वर्णन किया है। वाचनाचार्य सुधाकलश ने अपने ग्रंथ के द्वितिय अध्याय 'ताल प्रकाशन' में ७३ तालों का चित्रण किया है। इन सारे तालों को एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस तीस एवं छत्तीस मात्रिक तालों के वर्ग में विभक्त किया है। इन तालों के विस्तृत वर्णन में ताल का स्वरूप, ताल का अंग एवं ताल के बोल विदित होते हैं।

ताल के पटाक्षरों की इस क्रमबद्ध रचना को वर्तमान में 'ठेका' का स्वरूप मिला है। इन ठेके के बोलों में 'थ, ग, त, क, ध, र, झ, ष, ड, न, ट, य, ख'[17] इत्यादि पटाक्षर का उपयोग किया गया है और 'अ ,इ, उ, ए, ऐ, ओ, अं' के साथ संयोजन किया गया है। पंडित अहोबल ने संगीत पारिजात ग्रंथ के द्वितीय कांड में वाद्य एवं ताल की चर्चा की है। इस ग्रंथ में रचयिता ने चर्म वाद्यों की चर्चा की है एवं उन्होंने चर्म वाद्यों को आनद्ध से संबोधित किया है। इस चर्म वाद्य की चर्चा करते हुए अहोबल ने वाद्य के प्रकार, लक्षण एवं उसके पटाक्षर (वर्ण) का विवरण दिया है। ग्रंथ में दिए गए पटाक्षर 'ज, झ, ट, ठ, ण, त, थ, द, ध, न, ग, ड, क, म, प,' [18] इत्यादि का स्वर के साथ संयोजन कर स्पष्टीकरण किया है। रचयिता ने वाद्यों के उत्तम वर्णन के अनुसरण में ताल का भी विवरण दिया है। सर्वप्रथम उन्होंने मार्ग तालों का विस्तृत विचार–विमर्श करने के पश्चात् देशी तालों का आलेखन किया है। इसके अधीन ताल का अंग, ताल का स्वरूप एवं ताल के बोल दिए हैं। इन ताल के बोलों में मुख्य 'त, ग, ध, थ, र, क, न, म, ज, द, ट, झ'[19] इत्यादि पटाक्षरों का स्वर एवं पारस्परिक पटाक्षरों के साथ मिश्रण करके उत्तम चित्रण किया है। इन शास्त्रों में वर्णित पटाक्षरों (वर्णो) का निरुपण करने के पश्चात् शोधार्थी ने इसका अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें से प्रस्तुत सभी ध्वनियों के अतिरिक्त केवल ग्यारह पटाक्षर जो नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर, संगीतोपनिषत्सारोद्धार, संगीत पारिजात में साधारणतया वर्णित है, वे 'क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, थ, द, ध और म' है। ग्रंथकार सुधाकलश एवं अहोबल ने अपने ग्रंथ में वर्णित ताल के ठेके को स्वरूप देने के लिए इन पटाक्षरों का उपयोग किया है। इन ग्यारह पटाक्षरों का विश्लेषण यहां प्रस्तुत है।

कः संस्कृत भाषा ''कच्+ड''[20] से ''क'' पटाक्षर (वर्ण) निर्मित होता है। 'क' संस्कृत वर्णमाला का पहला व्यंजन है तथा कंठ्य ध्वनि एवं 'क वर्ग' का प्रथम पटाक्षर है। इसका वर्णन उल्लेखित चारों ग्रंथों में विदित होता है। वाद्यों की वादन प्रक्रिया के समय एवं हस्तपाटों में इस पटाक्षर का वर्णन किया गया है। पुष्कर, पणव, पटह, मृदंग, दुंदुभि, कटरा, करचक्र, रुंजा, डक्कुली, तबला, ढोलक आदि चर्म वाद्यों पर आघात करने से इसकी प्राप्ति होती है। अन्य स्वर ध्वनियों के साथ इसका संयोजन कर हमें 'क, कि, कु, के, को, कं' इत्यादि का संयोजित स्वरूप प्राप्य है।

खः संस्कृत भाषा में ''खव्ँ+ड''[21] से ''ख'' पटाक्षर (वर्ण) का निर्माण होता है। 'ख' संस्कृत वर्णमाला के कंठ्य ध्वनि एवं 'क वर्ग' का द्वितीय पटाक्षर है। 'ख' इस पटाक्षर का उल्लेख हमें संगीत पारिजात के अतिरिक्त अन्य

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

तीनों ग्रंथों में प्राप्य होता है। यह पटाक्षर शास्त्र में वर्णित पणव, पटह, मृदंग, डमरु, रुंजा एवं वाद्यों के हस्तपाटों में हमें प्राप्य होता है। ग्रंथों में 'अ, इ, उ, ए, ओ, अं' के साथ मिलाकर 'ख' का मिश्रित स्वरूप अर्जित होता है।

गः (वि.) ''गै+क''[22] मिश्रण कर हमें ''ग'' पटाक्षर (वर्ण) प्राप्य होता है और कंठ्य तथा 'क वर्ग' का तृतीय व्यंजन है। 'ग' का उल्लेख हमें सर्व ग्रंथों में प्राप्य है। यह पटाक्षर पुष्कर, पणव, पटह, मृदंग, मंदिलरा, रुंजा, डमरू, घौंसा, घड़स, तबला आदि वाद्यों के वादन एवं हस्तपाटों में निर्मित होता है। अन्य स्वर ध्वनियों के साथ संयोजन कर हमें 'ग, गि, गु, गे, गो, गं' प्राप्त होता है।

घः संस्कृत भाषा के ''हन्+टक्''[23] का संयोजन करने से ''घ'' पटाक्षर निर्मित होता है। 'घ' संस्कृत वर्णमाला के कंठ्य ध्वनियों के 'क वर्ग' का चतुर्थ व्यंजन है। नाट्यशास्त्र एवं संगीत रत्नाकर के ग्रंथकारों ने वाद्य वादन के समय प्रयुक्त ध्वनियों में से 'घ' पटाक्षर का वर्णन किया है। इसका निकास पुष्कर, पणव, पटह, मृदंग, उपंग वाद्यों का वादन करने से होता था। 'घ' को शास्त्रों में स्वर ध्वनियों के साथ मिश्रण कर 'घ, घि, घे, घो, घं' आदि मिश्रित स्वरूप का प्रयोग किया है।

टः ''ट'' मूर्धन्य पटाक्षरों में से एक तथा 'ट वर्ग' का प्रथम पटाक्षर है। प्रत्येक शास्त्रों में वर्णित 'ट' का निष्कासन पुष्कर, पणव, पटह, मृदंग, दुंदुभि, डमरू, डक्का, डक्कुली, रुंजा, उपंग एवं तबला वाद्य पर वादन करने से प्राप्त होता है। शास्त्रों में स्वर ध्वनियों के साथ मिश्रण कर 'ट, टा, टि, टु, टे, टै, टो, टं' स्वरूप उल्लेखित है।

ठः संस्कृत वर्णमाला के मूर्धन्य व्यंजनो में 'ट वर्ग' का द्वितीय पटाक्षर ''ठ'' है। इसका वर्णन संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रंथ के अतिरिक्त शेष तीनों ग्रंथों में विदित होता है। तत्कालीन पुष्कर, पटह, मृदंग, भेरी जैसे वाद्यों का वादन करते समय यह पटाक्षर निकलता था। शास्त्रों में 'अ, इ, उ, ए, ओ तथा अं' आदि स्वर ध्वनियों के साथ इसका चयन किया गया है।

डः ''ड'' पटाक्षर का संस्कृत वर्णमाला के मूर्धन्य ध्वनियों में से एक है एवं 'ट वर्ग' का तृतीय पटाक्षर विदित होता है। उल्लेखित चारों ग्रंथों में इसका आलेखन प्राप्त होता है। पुष्कर, दुंदुभि, पणव, पटह, मृदंग, डमरू, करचक्र, मंदिलरा एवं अन्य वाद्यों के हस्तपाटों में इसका चित्रण ग्रंथकारों द्वारा किया गया है। शास्त्रों में से हमें 'ड' का स्वर ध्वनियों के साथ मिला हुआ 'ड, डा, डि, डु, डे, डै, डो, डं' स्वरूप अर्जित होता है।

थः संस्कृत के ''थूड्+ड''[24] को साथ में मिश्रित करने से ''थ'' पटाक्षर विदित होता है। यह दंतव्य ध्वनि का एवं 'त वर्ग' का द्वितीय पटाक्षर है। 'थ' उपरोक्त सभी ग्रंथों में वर्णित मृदंग, पणव, पटह, आदि वाद्यों के वादनों में प्रयुक्त होता था। तबला वाद्य पर 'थ' पटाक्षर का चलन कत्थक नृत्य के साथ अधिक प्रयोग होता है। 'थ' का अधिक्तम स्वरध्वनियों के साथ संयोजित स्वरूप प्राप्य होता है। 'थ, था, थि, थू, थे, थै, थो, थौ, थं' उसका संयोजित स्वरूप है।

दः संस्कृत भाषा के (वि.) ''दै–दो या दा+क''[25] का संयोजन करने से ''द'' पटाक्षर प्रतीत होता है। यह 'त वर्ग' का तृतीय पटाक्षर एवं दंतव्य ध्वनि के अंतर्गत आता है। उल्लेखित चारों ग्रंथों में इसका वर्णन किया गया है। जब पणव, मृदंग, पटह, डक्कुली, त्रिवेली, ढवस का वादन किया जाता था तब 'द' का निर्माण होता था। 'द' को अन्य वाद्यों के हस्तपाटों में भी उपयोग में लिया गया है। 'थ' के अतिरिक्त 'द' का भी महत्तम स्वर ध्वनियों के साथ मिश्रित स्वरूप प्राप्य होता है जो 'द, दा, दि, दी, दे, दै, दो, दौ, दं' के रूप में है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

धः संस्कृत भाषा के (वि.) ''धा+ड''[26] को मिलाने से ''ध'' पटाक्षर प्रतीत होता है। 'ध' संस्कृत वर्णमाला के दंतव्य वर्णों में 'त वर्ग' का चतुर्थ पटाक्षर है। प्रत्येक शास्त्रों में 'ध' का वर्णन ग्रंथकारों द्वारा किया गया है। 'ध' का निर्माण पुष्कर, दुंदुभि, दर्दर, पणव, मृदंग, पटह, मंदिलरा, सेल्लुका, रुंजा, नक्कारा, तबला आदि वाद्यों के वादन से होता है। इन वाद्यों के हस्तपाटों में भी 'ध' का प्रयोग विपुल मात्रा में हुआ है। शास्त्रों में 'अ, आ, इ, ई, ए, ऐ, ओ, अं' इत्यादि स्वर ध्वनियों के साथ संयोजन किया गया है।

मः संस्कृत में ''मा+क''[27] का मिश्रण करके संस्कृत वर्णमाला के ओष्ठव्य वर्णों का ''म'' विदित होता है। 'म' पटाक्षर 'प वर्ग' का पंचम पटाक्षर है। 'म' का वर्णन नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर एवं संगीतोपनिषत्सारोद्धार में उपलब्ध है। पुष्कर, मृदंग, रुंजा, डक्कली आदि वाद्यों का वादन करते समय 'म' की उत्पत्ति होती थी। 'म' का 'अ, आ, इ, ए, ओ, अं' के साथ संयोजन विदित होता है। 'म' का अधिक प्रयोग हस्तपाटों की रचना के समय किया गया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा संगीत जगत के मूर्धन्य ग्रंथकारों द्वारा रचित उत्तम ग्रंथों में वर्णित चर्म वाद्यों के पटाक्षरों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया। शोधपत्र के प्रारंभ में शोधार्थी ने शास्त्रों का संक्षिप्त परिचय देते हुए शास्त्रों का मनुष्य जीवन से संबंध प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् शास्त्रों में संगीत के उल्लेख के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कर शोधार्थी ने महान संगीतज्ञों एवं संगीतज्ञों द्वारा रचित संगीत शास्त्रों का उल्लेख किया। तत्पश्चात् चर्म वाद्य की व्याख्या करते हुए उनके अलग–अलग नामों की चर्चा की। उसके बाद चार ग्रंथ नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर, संगीतोपनिषत्सारोद्धार एवं संगीत पारिजात में वर्णित वाद्यों एवं उसके उल्लेखन का निरूपण किया। तत्पश्चात् पटाक्षरों की व्याख्या देते हुए मुख्य चार शास्त्रों में वर्णित चर्म वाद्यों के मुख्य पटाक्षर तथा अन्य वाद्यों के हस्तपाटों का संक्षिप्त विवरण दिया है। इन पटाक्षरों के साथ स्वर ध्वनियों के मिश्र स्वरूप भी प्रस्तुत किए। तत्पश्चात् शोधार्थी ने संगीतोपनिषत्सारोद्धार एवं संगीत पारिजात ग्रंथों में ताल प्रकरण की पटाक्षरों की दृष्टि से चर्चा की जिसमें ग्रंथकारों द्वारा वर्णित ताल के बोलों का उल्लेखन किया एवं इन तालों के ठेके में वर्णित पटाक्षरों का संक्षिप्त विवरण दिया। ठेके में वर्णित पटाक्षरों का परिचय कराते हुए शोधार्थी ने चार ग्रंथों में वर्णित पटाक्षरों में से कुल ग्यारह ध्वनियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया। यह ग्यारह ध्वनियाँ कुछ इस प्रकार हैः 'क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, थ, द, ध एवं म'। इन पटाक्षरों के विश्लेषण में शोधार्थी ने पटाक्षर की निर्मिति का प्रस्तुतिकरण किया। शोधार्थी ने पाया कि वर्तमान समय में 'क, ग, ट, थ, द एवं ध' का तबला, पखावज़, मृदंगम् एवं 'म' का पखावज़, मृदंगम् आदि चर्म वाद्य पर वादन किया जाता है। तत्पश्चात् जिन ग्रंथों में पटाक्षरों का उल्लेख है उसका विवरण किया एवं जिन चर्म वाद्यों पर वादन के समय इसका निर्माण होता था उनका वर्णन भी किया। ग्यारह प्रकार की ध्वनियों का चारों ग्रंथों में कौन–सी स्वर ध्वनि के साथ मिश्रण किया है एवं वर्तमान में उस पटाक्षर का प्रयोग कैसे हो रहा है उसका भी उल्लेख शोधार्थी द्वारा किया गया है।

संदर्भ

1) मिश्रा, लालमणि. (1973). भारतीय संगीत वाद्य. पृ. 65
2) चौधरी, सुभद्रा. (2002). शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर (तृतीय खंड़). अ. 6(श्लोक–1), पृ. 247
3) शाह, उमाकान्त. (1961). वाचनाचार्य सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार. अ. 4 (श्लोक–87), पृ. 87

4) शाह, उमाकान्त. (1961). वाचनाचार्य सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार. अ. 4 (श्लोक–90), पृ. 87
5) गोंधलेकर, रावजी श्रीधर.(1819). पंड़ित अहोबल कृत संगीत पारिजात. पृ. 85
6) शास्त्री, बाबूलाल. शुक्ल. (2012). श्रीभरतमुनिप्रणित हिन्दी नाट्यशास्त्र. पृ. 356
7) शास्त्री, बाबूलाल. शुक्ल. (2012). श्रीभरतमुनिप्रणित हिन्दी नाट्यशास्त्र. पृ. 356
8) शास्त्री, बाबूलाल. शुक्ल. (2012). श्रीभरतमुनिप्रणित हिन्दी नाट्यशास्त्र. पृ. 356
9) शास्त्री, बाबूलाल. शुक्ल. (2012). श्रीभरतमुनिप्रणित हिन्दी नाट्यशास्त्र. पृ. 356
10) शास्त्री, बाबूलाल. शुक्ल. (2012). श्रीभरतमुनिप्रणित हिन्दी नाट्यशास्त्र. पृ. 356
11) चौधरी, सुभद्रा. (2002). शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर (तृतीय खंड़). पृ. 443
12) चौधरी, सुभद्रा. (2002). शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर (तृतीय खंड़). पृ. 444
13) चौधरी, सुभद्रा. (2002). शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर (तृतीय खंड़). पृ. 446–447
14) शाह, उमाकान्त.(1961). वाचनाचार्य सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार. पृ. 83
15) शाह, उमाकान्त. (1961). वाचनाचार्य सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार. पृ. 83
16) शाह, उमाकान्त. (1961). वाचनाचार्य सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार. पृ. 85–86
17) शाह, उमाकान्त. (1961). वाचनाचार्य सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार. पृ. 24–53
18) गोंधलेकर, रावजी श्रीधर. (1819). पंड़ित अहोबल कृत संगीत पारिजात. पृ. 87
19) गोंधलेकर, रावजी श्रीधर. (1819). पंड़ित अहोबल कृत संगीत पारिजात. पृ. 109–132
20) आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 234
21) आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 321
22) आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 327
23), आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 369
24) आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 443
25) आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 444
26) आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 487
27) आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. पृ. 758

संदर्भ ग्रंथ सूची

शिवादत्ता, पंड़ित. और परब, पांडुरंग काशीनाथ. (1894). श्रीभरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र. निर्णया सागर प्रेस, बंबई.
शाह, उमाकान्त. (1961). वाचनाचार्य सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार ओरिएन्टल इन्स्टिटयूट, बड़ौदा.
गोंधलेकर, रावजी श्रीधर. (1819). पंड़ित अहोबल कृत संगीतपारिजात.
आप्टे, वामन शिवराम. (1966). संस्कृत–हिन्दी कोश. श्री सुंदरलाल जैन (मोतीलाल बनारसीदास), दिल्ली.
चौधरी, सुभद्रा. (2002). शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर. राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
शास्त्री, बाबूलाल. शुक्ल. . (2012). श्री भरतमुनिप्रणित हिन्दी नाट्यशास्त्र (चतुर्थ भाग).चौखम्भा संस्कृत संस्थान.
मिश्रा, लालमणि. (1973). भारतीय संगीत वाद्य. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.
अनामिका, कुमारी. (2014). अवनद्ध वाद्यों में ध्वनि विकास. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
जौहरी, रेणु (2019). ग्रंथ सारामृत्. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली.